P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

किशोरों में सामाजिक बुद्धि का अध्ययन

देवेन्द्र सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल

मुरारी सिंह यादव
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल

सारांश

मानव सामाजिक परिवेश में अपने जीवन के क्रियाकलापों को करता है तथा समाज से कुछ न कुछ प्रेरणा प्राप्त करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं को स्वीकारता है व अपने व्यवहार में अपनाता है। व्यक्ति की अपने वातावरण, समाज तथा नवीन परिस्थितियों में समायोजन व अनुकूलन की योग्यता सामाजिक बुद्धि कहलाती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास कर, उसका वातावरण में उचित समायोजन कराना है। अतः शिक्षा के द्वारा किशोरों में सामाजिक बुद्धि से सम्बन्धित विभिन्न आयामों को उचित दिशा में विकसित किया जा सकता है तथा उनको समाज के रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित किया जा सकता है। वर्तमान अध्ययन में किशोरों में सामाजिक बुद्धि का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया। आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए डा0 एन.के. चड्ढ़ा तथा ऊषा गनेसन' द्वारा निर्मित सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी –परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुये कि –

1. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान के मूल्य में सार्थक अन्तर है जो यह दर्शाता है कि छात्राओं में सामाजिक बुद्धि छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक है।
2. छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर यह दर्शाता है कि छात्राओं में सहनशीलता छात्रों की अपेक्षाकृत कुछ मात्रा में अधिक है।
3. छात्र एवं छात्राओं के सहयोग की भावना के मध्यमान के मूल्य का अन्तर यह दर्शाता है कि छात्राओं में सहयोग की भावना छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक है।
4. छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्यमान के मूल्य का मान यह दर्शाता है कि छात्र एवं छात्राओं का विश्वास स्तर समान है।
5. छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्राओं में संवेदनशीलता छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पायी जाती है।
6. छात्रों में सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान छात्राओं से कुछ मात्रा में अधिक पाया गया है क्योंकि छात्र सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में अधिक रहते हैं। वे समाज के क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं तथा सामाजिक वातावरण में स्वयं को शीघ्र ही समायोजित कर लेते हैं।
7. छात्र एवं छात्राओं का व्यवहार कुशलता समान है। छात्र एवं छात्राओं दोनों में व्यवहार कुशलता का गुण विद्यमान रहता है।
8. छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना समान है।
9. छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्राओं की स्मृति छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

मुख्य शब्दः सामाजिक बुद्धि, किशोरावस्था

प्रस्तावना

वर्तमान भारतीय समाज तीव्र संक्रमण काल से गुजर रहा है। हमारे प्राचीन मूल्य, परम्पराएँ, विचारधाराएँ, आदर्श व मानक लुप्त होते जा रहे हैं।

लोगों की आस्था प्राचीन मूल्यों के प्रति समाप्त होती जा रही है जिसके फलस्वरूप नवीन मूल्य, नवीन आदर्श, नवीन मानक विकसित होते जा रहे हैं। ऐसे समय में सामाजिक परिवेश में समायोजन की समस्या बड़ी जटिल होती जा रही है। तकनीकी ज्ञान का विस्फोटन, जीवन के संसाधनों की निरन्तर कमी, पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि का दुष्कर बोझ, सामाजिक व्यवस्था में क्रियाशील अति व्यस्त मानव मूल्यों का ह्रास आदि कुछ ऐसे कारक हैं जिसमें सामान्य व्यक्ति अपने आपको झकझोरा हुआ अनुभव कर रहा है।

शिशु जन्म से सामाजिक प्राणी नहीं होता है, जैसे–जैसे उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है, वैसे–वैसे उसका सामाजिक विकास भी होता है। अपने परिवार के सदस्यों, अपने समूह के साथियों, अपने समाज की संस्थाओं और कल्पनाओं, अपनी स्वयं की रूचियों और इच्छाओं से प्रभावित होकर वह अपने सामाजिक व्यवहार का निर्माण और सामाजिक विकास करता है। सामाजिक व्यवहार में स्थिरता न होकर परिवर्तनशीलता होती है।

'क्रो एवं क्रो' के अनुसार

''जन्म के समय शिशु न तो सामाजिक प्राणी होता है और न असामाजिक। पर वह इस स्थिति में बहुत समय तक नहीं रहता है।'' दूसरे व्यक्तियों के निरन्तर सम्पर्क में रहने के कारण उसकी स्थिति में परिवर्तन होना और फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास होना आरम्भ हो जाता है। यही विकास उसे परिपक्वता की ओर ले जाता है जिसकी परिणति सामाजिक परिपक्वता के रूप में होती है।

किशोरावस्था की विभिन्न समस्याओं एवं उनके कारणों के विश्लेषण करने के उपरान्त उनको समाज में अधिक सामाजिक परिपक्व बनाने के उद्देश्य से शोधकर्त्ता का ध्यान छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के अध्ययन की ओर आकर्षित हुआ। इस अवस्था पर छात्र अधिक परिपक्व हो जाते हैं, उनके विचार किसी भी व्यक्ति, वस्तु, परम्परा या विचारों के प्रति लगभग स्थिर हो जाते हैं, जल्दी से परिवर्तनशील नहीं होते हैं। इस अवस्था में उनमें सहनशीलता, सहयोगात्मक, किसी भी वस्तु, व्यक्ति या विचारों आदि में विश्वास करने की क्षमता दृढ़ हो जाती है।

सम्बन्धित अध्ययनों का सर्वेक्षण

गेटजल्स और जैक्सेन (1958) ने अपने अध्ययन सृजनात्मकता तथा बुद्धि का सम्बन्ध का अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि सृजनात्मकता और बुद्धि एक दूसरे के समानार्थक नहीं हैं। विजवाला (2002) ने अपने अध्ययन दुश्चिंता का बुद्धि एवं उपलब्धि पर प्रभावों का अध्ययन में पाया कि दुश्चिंता निम्न बुद्धि से सम्बन्धित है। रानी (2003) ने अपने अध्ययन उच्च बुद्धि और निम्न बुद्धि वाले छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन में पाया कि बुद्धि और व्यावसायिक आकांक्षा में सम्बन्ध होता है। उच्च बुद्धि वाले छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा उच्च तथा निम्न बुद्धि वाले छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा निम्न होती है। माथुर (2004) ने अपने अध्ययन आत्म विश्वास एवं बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि उच्च बौद्धिक स्तर के साथ ही आत्माभिव्यक्ति में भी वृद्धि होती है। निम्न बुद्धि के साथ ही आत्माभिव्यक्ति में भी निम्नता आती है। फौजदार (2004) ने अपने अध्ययन बी.एड. की छात्राओं की शिक्षण अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर का अध्ययन में पाया कि बुद्धि और शिक्षण अभिक्षमता में न्यून सहसम्बन्ध है। सिंह (2005) ने अपने अध्ययन अति विशिष्ट एवं प्रतिभाशाली बालिकाओं के बौद्धिक क्षमता तथा समायोजन की क्षमता का अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बालिकाओं की सामान्य बौद्धिक क्षमता विशिष्ट बालिकाओं से अधिक है। प्रतिभाशाली बालिकाओं की समायोजन क्षमता स्वास्थ्य की दृष्टि से विशिष्ट बालिकाओं से अच्छी है। अनंतकृष्णा (2007) ने अपने अध्ययन आत्मविश्वास और सामाजिक बुद्धि का सहसम्बंधात्मक अध्ययन में पाया कि आत्मविश्वास और सामाजिक बुद्धि के बीच सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है। उच्च आत्मविश्वास वाले व्यक्तियों की सामाजिक बुद्धि उच्च है। यादव (2007) ने अपने अध्ययन विचलित एवं अविचिलित बालकों की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि विचलित एवं अविचलित बालकों की शाब्दिक योग्यता, सामूहिक योग्यता एवं तार्किक योग्यता में अन्तर है। अविचलित बालकों की शाब्दिक योग्यता एवं आंकिक योग्यता अधिक है। पूनम (2008) ने अपने अध्ययन संयुक्त एवं एकांकी परिवार की छात्राओं की सामाजिक–बुद्धि का मापन में पाया कि संयुक्त परिवार की छात्राओं में सामाजिकता की भावना, आपसी लेन–देन, परम्पराओं को स्वीकारने की अभिवृत्ति, मानवीय सामजंस्य के गुण अधिक मात्रा में पाए जाते है। एकांकी परिवार की छात्राओं में सामाजिकता संवेदनशीलता औसत स्तर की पायी जाती है। सविता (2008) ने अपने अध्ययन विभिन्न बुद्धि स्तर के व्यक्तित्व स्वरूप एवं विद्यालय समायोजन के सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि बुद्धिस्तर एवं निष्पत्ति तथा आक्रामक व्यवहार एवं मनस्वायी प्रकृति में सहसम्बन्ध था। बौद्धिक एवं आत्मविश्वास में नकारात्मक सहसम्बन्ध था। शर्मा एवं तिवारी (2009) ने अपने अध्ययन सामाजिक परिपक्वता एवं बुद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन में पाया कि उच्च एवं निम्न बुद्धि के छात्रों की सामाजिक प्रबुद्धता में सार्थक अन्तर है। सत्संगी (2009) ने अपने अध्ययन बुद्धि एवं उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि उच्च बुद्धि का गणित के साथ उच्च सहसम्बन्ध था। औसत बुद्धि का हिन्दी के साथ उच्च सहसम्बन्ध था। सामान्य ज्ञान की अपेक्षा विज्ञान के साथ उच्च बुद्धि का सहसम्बन्ध था। सिंह (2009) ने अपने अध्ययन विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की सामाजिक प्रबुद्धता का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि अंग्रेजी माध्यम, सरकारी सहायता प्राप्त तथा नगर महापालिका विद्यालयों की छात्राएँ सामान्य से अधिक सामाजिक प्रबुद्धता सम्पन्न थी। जायसवाल (2009) ने अपने अध्ययन हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की बुद्धि तथा आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की बुद्धि तथा आत्मविश्वास हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। उच्च बुद्धि

तथा निम्न बुद्धि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. छात्र एवं छात्राओं की सहयोग की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. छात्र एवं छात्राओं की सहयोग की भावना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
8. छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
9. छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

अनुसंधान विधि

अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये शोधार्थी द्वारा वर्तमान अध्ययन में 'वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार उक्त अध्ययन में सामाजिक बुद्धि का विश्लेषण लिंग के आधार पर किया गया। लिंग के आधार पर ही सामाजिक बुद्धि से सम्बन्धित आयामों :

1. सहनशीलता
2. .सहयोग
3. विश्वास स्तर
4. संवेदनशीलता
5. सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान
6. व्यवहार कुशलता
7. हास्य की भावना
8. स्मृति का परीक्षण किया गया।

उक्त आकडों के संकलन हेतु– डा0 एन.के. चड्ढ़ा तथा ऊषा गनेसन द्वारा निर्मित 'सामाजिक बुद्धि मापनी' का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया। न्यादर्श हेतु रूद्रप्रयाग जनपद (उत्तराखण्ड) के अगस्त्यमुनि ब्लॉक से 5 राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रदत्तों के अनुकूल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। इस अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है :

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. प्रमाणिक त्रुटि
4. क्रान्तिक अनुपात।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

तालिका : 1

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	110.12	8.12	98	2.77	.05 स्तर पर सार्थक
छात्रायें	50	114.22	6.82			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान का मूल्य 110.12 है तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान का मूल्य 114.22 है। छात्रों की सामाजिक बुद्धि के प्रमाणिक विचलन का मान 8.12 है तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के प्रमाणिक विचलन का मान 6.82 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 2.77 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है

तथा यह मान प्राप्त मान 2.77 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान के मूल्य में सार्थक अन्तर यह दर्शाता है कि छात्राओं में सामाजिक बुद्धि छात्रों से अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः हम कह सकते है कि छात्राओं में सामाजिक समायोजन की योग्यता अधिक होती है। वह सहयोगी प्रवृत्ति की होती हैं। सामाजिक बुद्धि के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी दूसरों के विचारों एवं अनुभूतियों के प्रति संवेदनशील हो। छात्रायें, दूसरों के साथ घुल–मिलकर कार्य करना पसंद करती हैं। उनके अन्दर समस्याओं का समाधान करने की योग्यता अधिक मात्रा में पाई जाती है।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2

छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	21.16	2.22	98	0.60	.05 स्तर पर असार्थक
छात्रायें	50	21.44	2.56			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों की सहनशीलता के मध्यमान का मूल्य 21.16 है तथा छात्राओं की सहनशीलता के मध्यमान का मूल्य 21.44 है। छात्रों की सहनशीलता के प्रमाणिक विचलन का मान 2.22 है तथा छात्राओं की सहनशीलता के प्रमाणिक विचलन का मान 2.56 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 0.60 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 0.60 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर यह दर्शाता है कि छात्राओं में सहनशीलता छात्रों से अपेक्षाकृत कुछ मात्रा में अधिक है।

इससे ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं की सहनशीलता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। वर्तमान समाज की जटिलताएँ एवं उनमें स्वयं को समायोजित करने की समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, व्यवसाय सम्बन्धी समस्याएँ आदि बढ़ती जा रही है, जो विद्यार्थी को सहनशील बनाती है। जब विद्यार्थी के समक्ष तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है तो वह धैर्य व शांति से काम करके तनाव की स्थिति से मुक्त होता है। कुछ छात्र एवं छात्रा दूसरों की इच्छा पूर्ति के लिए अपनी इच्छाओं व आकांक्षाओं का बलिदान कर देते हैं।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की सहयोग की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की सहयोग की भावना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है

तालिका 3

छात्र एवं छात्राओं की सहयोग की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	26.30	3.32	98	4.12	.05 स्तर पर सार्थक
छात्रायें	50	28.76	2.63			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों में सहयोग की भावना के मध्यमान का मूल्य 26.30 है तथा छात्राओं में सहयोग की भावना के मध्यमान का मूल्य 28. 76 है। छात्रों में सहयोग की भावना का प्रमाणिक विचलन का मान 3.32 है तथा छात्राओं में सहयोग की भावना का प्रमाणिक विचलन का मान 2.63 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 4.12 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 4.12 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं के सहयोग की भावना के मध्यमान के मूल्य का अन्तर यह दर्शाता है कि छात्राओं में सहयोग की भावना छात्रों से अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः हम कह सकते है कि छात्राओं में दूसरों की सहायता करने की भावना अधिक होती है। वे परिवार तथा परिवार के सदस्यों की उचित देखभाल करती है। यदि उनका कोई मित्र परेशानी में है तो वे उसकी सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहती है तथा उसकी परेशानी का निवारण करने का प्रयत्न करती है।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

तालिका 4

छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	21.64	1.68	98	1.32	.05 स्तर पर असार्थक
छात्रायें	50	22.07	1.58			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों के विश्वास स्तर के मध्यमान का मूल्य 21.64 है तथा छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्यमान का मूल्य 22.07 है। छात्रों के विश्वास स्तर के प्रमाणित विचलन का मान 1.68 है तथा छात्राओं के विश्वास स्तर के प्रमाणिक विचलन का मान 1. 58 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 1.32 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 1.30 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर के मध्यमान के मूल्य का मान यह दर्शाता है कि छात्र एवं छात्राओं के विश्वास स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः हम कह सकते है कि छात्र एवं छात्राओं में विश्वास स्तर का गुण समान रूप से विद्यमान रहता है। इसका कारण है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता है और इसके लिए माता–पिता भी अपने बालकों को प्रेरित करते है जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 5

छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	21.36	1.04	98	3.50	.05 स्तर पर सार्थक
छात्रायें	50	22.82	2.81			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों की संवेदनशीलता के मध्यमान का मूल्य 21.36 है तथा छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्यमान का मूल्य 22.82 है। छात्रों की संवेदनशीलता का प्रमाणिक विचलन का मान 1.04 है तथा छात्राओं की संवेदनशीलता का प्रमाणिक विचलन का मान 2.81 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 3.50 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 3.50 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की संवेदनशीलता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्राओं में संवेदनशीलता छात्रों से अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पायी जाती है।

अतः हम कह सकते है कि जो विद्यार्थी अधिक संवेदनशील होते है, वे दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को जानते है तथा उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते है। छात्रायें दूसरे व्यक्तियों की पीड़ा व दयनीय स्थिति को देखकर उदास व दुःखी हो जाती हैं तथा वे उनकी सहायता करने का प्रयत्न करती हैं।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 6

छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	1.72	0.89	98	2.62	.05 स्तर पर सार्थक
छात्रायें	50	1.20	0.95			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्यमान का मूल्य 1.72 है तथा छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्यमान का मूल्य 1.20 है। छात्रों का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान का प्रमाणिक विचलन का मान 0.89 है तथा छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान का प्रमाणिक विचलन का मान 0.95 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 2.62 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है

तथा यह मान प्राप्त मान 2.62 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान के मध्यमान का मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्राओं में सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान छात्रों से अपेक्षाकृत कम है।

अतः स्पष्ट होता है कि छात्रों में सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान छात्राओं से कुछ मात्रा में अधिक पाया गया है क्योंकि छात्र सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में अधिक रहते हैं। वे समाज के क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। वे अपनी समस्याओं का समाधान सामाजिक वातावरण को ध्यान में रखकर करते है तथा सामाजिक वातावरण में स्वयं को शीघ्र ही समायोजित कर लेते हैं।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 7

छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश **(df)**	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	4.36	0.76	98	1.16	.05 स्तर पर असार्थक
छात्रायें	50	4.20	0.78			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों की व्यवहार कुशलता के मध्यमान का मूल्य 4.36 है तथा छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्यमान का मूल्य 4.20 है। छात्रों की व्यवहार कुशलता के प्रमाणिक विचलन का मान 0.76 है तथा छात्राओं की व्यवहार कुशलता के प्रमाणिक विचलन का मान 0.78 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 1.16 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 1.16 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की व्यवहार कुशलता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्रों की व्यवहार कुशलता छात्राओं की अपेक्षा कुछ मात्रा में अधिक है।

अतः स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार कुशलता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। छात्र एवं छात्राओं दोनों में व्यवहार कुशलता का गुण विद्यमान रहता है। अतः व्यवहार कुशल विद्यार्थी ही विशेष कार्यों के प्रति उचित दृष्टिकोण रखता है तथा अपने कार्यों को कुशलता के साथ पूरा करता है। जिन विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति प्रबल नहीं होती है, उनमें व्यवहार कुशलता कम होती है।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 8

छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	4.20	1.58	98	0.87	.05 स्तर पर असार्थक
छात्रायें	50	4.48	1.78			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों के हास्य की भावना के मध्यमान का मूल्य 4.20 है तथा छात्राओं की हास्य की भावना के मध्यमान का मूल्य 4.48 है। छात्रों के हास्य की भावना का प्रमाणिक विचलन का मान 1.58 है तथा छात्राओं की हास्य की भावना का प्रमाणिक विचलन का मान 1.74 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 0.87 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 0.87 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्यमान का मूल्य दर्शाता है कि छात्राओं में हास्य की भावना छात्रों से कुछ मात्रा में अधिक है।

अतः स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की हास्य की भावना के मध्य सार्थक अन्तर नहीं होता है। हास्य की भावना से युक्त विद्यार्थी सदैव खुश रहते हैं। उनमें दूसरों से मिलने, बातचीत करने आदि की प्रवृत्ति होती है। वे अन्य विद्यार्थीयों से घनिष्ठता बनाए रखते हैं तथा उनके साथ शीघ्र ही समायोजित हो जाते हैं।

उद्देश्य

छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.- V, ISSUE-I,August-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

तालिका 9

छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश (df)	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	50	9.84	1.58	98	2.42	.05 स्तर पर सार्थक
छात्रायें	50	10.56	1.36			

परिणाम विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से ज्ञात होता है कि छात्रों की स्मृति क्षमता के मध्यमान का मूल्य 9.84 है तथा छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्यमान का मूल्य 10.56 है। छात्रों की स्मृति क्षमता का प्रमाणिक विचलन का मान 1.58 है तथा छात्राओं की स्मृति क्षमता का प्रमाणिक विचलन का मान 1.36 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात 2.42 है जिसका मान t तालिका के अनुसार 98 स्वतन्त्रता के .05 सार्थकता स्तर पर 1.99 है तथा यह मान प्राप्त मान 2.42 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की स्मृति क्षमता के मध्यमान के मूल्य का अन्तर दर्शाता है कि छात्राओं की स्मृति छात्रों की अपेक्षा कुछ मात्रा में अधिक है।

अतः हम कह सकते है कि छात्राओं में पहचानने की क्षमता अधिक पाई जाती है तथा उनमें याद करने की योग्यता भी अधिक होती है। वे स्मृति के द्वारा पूर्वज्ञान के आधार पर अपने कार्यों को सरल बनाती हैं तथा शीघ्र ही अपने कार्यो में सफलता प्राप्त कर लेती हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए :

1. छात्राओं की सामाजिक बुद्धि छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक मात्रा में पाई गई और यह अन्तर सार्थक है।
2. छात्राओं में सहनशीलता का गुण छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है किन्तु यह अन्तर सार्थक नहीं है।
3. छात्राओं की सहयोग की भावना छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है और यह अन्तर सार्थक है।
4. छात्राओं का विश्वास स्तर छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है किन्तु यह अन्तर सार्थक नहीं है।
5. छात्राओं की संवेदनशीलता छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है और यह अन्तर सार्थक है।
6. छात्रों का सामाजिक वातावरण का अभिज्ञान छात्राओं की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है और यह अन्तर सार्थक है।
7. छात्रों की व्यवहार कुशलता छात्राओं की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है किन्तु यह अन्तर सार्थक नहीं है।
8. छात्राओं में हास्य की भावना छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है किन्तु यह अन्तर सार्थक नहीं है।
9. छात्राओं की स्मृति क्षमता छात्रों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक है और यह अन्तर सार्थक है।

शैक्षिक उपयोगिता

किसी भी देश की उन्नति शिक्षित, बुद्धिमान व सुसमायोजित नागरिकों पर निर्भर करती है। अतः देश, समाज व परिवार की उन्नति व विकास के लिए हमें युवाओं की समस्याओं को हल करके उनके लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करना होगा ताकि वह स्वयं परिवार, समाज व देश सभी को प्रगति के उन्नत शिखर पर आरूढ़ करने में सफल हो सकें तथा मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं को अपनी बुद्धि व कौशल के द्वारा दूर करके भावी पीढ़ी की प्रगति के मार्ग को सहज बना सके।

शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है कि वह अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने, पाठ्यक्रम रूचि को योग्यतानुसार निर्धारित करने में सहायक हो। वह छात्रों में बुद्धि के स्तर का पता लगाकर, उसमें सामाजिक बुद्धि, वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा शक्ति का उचित विकास करें, जिससे वह परिस्थितियों का तत्परता से सामना कर सकें।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास कर उसका वातावरण में उचित समायोजन कराना हैं। बालक के व्यक्तित्व विकास में परिवार अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा पारिवारिक वातावरण में ही प्रारम्भ होती है। युवाओं की क्षमता के अनुसार ही उनके सामने लक्ष्य रखे जाए ताकि वे अपनी क्षमतानुसार सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन कर सकें तथा अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर परिस्थितियों के साथ उचित समायोजन कर सकें। प्रत्येक बालक का समायोजन उसके व्यक्तित्व से निर्धारित होता है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वह बालकों के व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दे एवं उनमें सामाजिकता की भावना का विकास करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

1. भार्गव, महेश चन्द. (1985). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण (छठा संस्करण), हरप्रसाद भार्गव, आगरा ।
2. भटनागर, सुरेश (1975).शिक्षा मनोविज्ञान (वॉल्यूम–3). मेरठ, लॉयल बुक डिपो।
3. शर्मा, आर.ए. (2003). शिक्षा अनुसंधान (नवीन संस्करण). मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन।
4. कपिल, एच.के. (2004). अनुसंधान विधियाँ (एकादश संस्करण). लखनऊ, वेदान्त पब्लिकेशन्स।
5. पाठक, पी.डी. (1996). शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्त (द्वितीय संस्करण). आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. भार्गव, महेश(1993). आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन (नौवॉ संस्करण), हरप्रसाद भार्गव।

7. राठौर, जगदीश सिंह (1990). समाज, मनोविज्ञान, विवेक प्रकाशन (प्रथम संस्करण). दिल्ली, जवाहर नगर।
8. वर्मा एवं उपाध्याय (1978). शिक्षा मनोविज्ञान।
9. सुखिया, एस.पी. (1948). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. त्रिपाठी, लालवचन (1992). आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, आगरा, हरप्रसाद भार्गव।
11. श्रीवास्तव, डी.एन. (1997). अनुसंधान विधियाँ (प्रथम संस्करण), आगरा, साहित्य प्रकाशन।
12. Anastasi, A. (1997). Psychological Testing (7th ed.). Delhi, Pearson education.
13. Best, John W. (2005). Research in Education (10th ed.). Delhi, Pearson education.
14. Buch, M.B. (1974). Second Sarvey of Research in Education. Baroda, Centre of Advance Study in Education.
15. Garrett, Henery E. (2005). Statistics in Psychology and Education. Paragon International Publication.
16. Gilford, J.P. (1967). The Nature of Human Intelligance. US, McGraw-Hill Inc.
17. Young, Kimball. (1957). Handbook of social Psychology (2nd rev.ed.). Routledge and Kegan Paul.

जर्नल्स

Thondike, E.I. (1921). Intelligence and its Measurement: A Symposium. *Journal of Educational Psychology*, page 12, 124-127.

इनसाक्लोपीडिया

1. Buch, M.B. (1960). A Sarvey of Research in Education. Baroda, Centre of Advance Study in Education, page 226-227.
2. Gangopadhyaya, B.K. A Sarvey of Research in Education, page 253-254.
3. Gupta, P.K. A Sarvey of Research in Education, page 183.

लघु शोध प्रबन्ध

1. माथुर, नीलिमा (1976). आत्म अभिव्यक्ति एवं बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन, एम.एड. शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, आगरा विश्वविद्यालय।
2. शर्मा, सुधा (1981). बुद्धि एवं धार्मिकता का सहसम्बंधात्मक अध्ययन, एम.एड. शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, आगरा विश्वविद्यालय।
3. लता, पूनम (1988). संयुक्त एवं एकांकी परिवार की छात्राओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड.शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
4. शर्मा, अनीता (2008). छात्राओं की सामाजिक बुद्धि पर माता–पिता सम्बन्धी प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन, एम.एड. शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, आगरा विश्वविद्यालय।